8. संतुलित आहार खिलाने पर पशु अपनी पूरी अनुवांशिक क्षमता के अनुसार दूध का उत्पादन करता है।
9. पशु के दुग्ध उत्पादकता जीवन की अवधि में बढ़ोतरी होती है।
10. पशु के दो ब्याँतों के बीच की दूरी कम होती है।

किसानों के लिए सलाह :

दुग्ध उत्पादन कार्य को एक व्यवसाय समझकर किसानों को पशुपालन तथा दुग्ध उत्पादन करना चाहिये। दुधारू पशुओं को संतुलित आहार देना सुनिश्चित करना चाहिए। व्यवसाय की दृष्टि में पशुपालन भी एक उद्योग की तरह ही होता हैं। पशुपालन रूपी इस उद्योग को जितना भोजन कच्चे पदार्थ के रूप में खिलायेंगे उतना ही फैक्ट्री का अन्तिम उत्पादन (दूध) तथा स्वस्थ संतान के रूप में प्राप्त होगा। पशुओं को उनके वज़न, दुग्ध उपज मात्रा तथा अन्य कार्यों की आवश्यकता के अनुसार जो आहार संतुलित रूप में दिया जाता है तो उसमें सभी आहार के अवयवों एवं तत्वों का अधिकतम उपयोग होता है और ऐसा आहार दुग्ध उत्पादन की दृष्टि से फायदेमंद होता है।

संतुलित पशु आहार (सान्द्र दाना मिश्रण) को विभिन्न वर्ग के पशुओं को उनकी आवश्यकतानुसार खिलाने की मात्रा तालिका में प्रस्तुत की गई है।

विभिन्न वर्ग के पशुओं को संतुलित पशु आहार की आवश्यकता

क्र.सं.	पशु वर्ग/अवस्था	जीवन निर्वाह व गर्भ हेतु पशु आहार की मात्रा कि.ग्रा./दिन	दुग्ध उत्पादन हेतु पशु आहार की मात्रा कि.ग्रा./प्रतिदिन
1.	गाय दूध में	1.50	प्रत्येक 2.50 लीटर दूध पर 1.00 कि.ग्राम
2.	भैंस दूध में	2.0	प्रत्येक 2 लीटर दूध पर 1.00 कि.ग्राम
3.	6 माह पूर्व के गर्भ पर गाय तथा भैंस	1.50 से 2.00 नस्ल के अनुसार	
4.	6 माह गर्भ के बाद की गाय व भैंस व संकर गाय	1.50 से 2.00 नस्ल के अनुसार	
5.	बछियो/कटड़ियो को कम उम्र में शीघ्र गर्भ धारण योग्य बनाने के लिए	1.00 से 1.50 नस्ल के अनुसार	
6.	बैल तथा प्रजनन सांड	1.00 से 2 कि.ग्रा. नस्ल के अनुसार	
7.	दूध से सूखी गाय को गर्भी में लाने हेतु	1.00 से 1.50 नस्ल के अनुसार	
8.	10 कि. दूध देने वाली संकर गाय को अथवा मुर्रा भैंस को (हरा चारा देने की स्थिति में)	1.00 से 1.50	प्रति लीटर दूध पर 400 ग्राम

प्रकाशक : निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर 342 003

सम्पर्क सूत्र : दूरभाष : +91-291-2786584 (कार्यालय)
फैक्स : +91-291-2788706

ई-मेल : director@cazri.res.in

वेबसाइट : http://www.cazri.res.in

संपादकीय समिति : एस.के. जिंदल, निशा पटेल, डी.वी. सिंह, एन.आर. पंवार, पी. सांत्रा, पी.के. रॉय तथा राकेश पाठक।

दुधारू पशुओ में संतुलित पोषण

सुभाष कच्छावाह
धीरज सिंह
ए. के. मिश्रा

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान
(आई.एस.ओ. 9001 : 2008)

कृषि विज्ञान केन्द्र

पाली-मारवाड़ (राज.) 306401
(: (02932) 256771

जिस प्रकार मनुष्यों को स्वस्थ रहने के लिए पर्याप्त भोजन की आवश्यकता होती है ठीक उसी प्रकार पशुओं को भी जीवित रहने, उत्पादन करने एवं शारीरिक वृद्धि के लिए खुराक (भोजन) की आवश्यकता होती है। पशुओं के आहर में कार्बोहाईड्रेट, प्रोटीन, वसा, खनिज लवण तथा विटामिन्स की आवश्यकता होती है। पशुओं द्वारा इन पोषक तत्वों का प्रयोग जैविक क्रियाओं, शारीरिक वृद्धि, दुग्ध उत्पादन, गर्भ अवस्था में भ्रूण के पोषण व विकास, रोग रोधक क्षमता के सृजन आदि कार्यों में किया जाता है।

संतुलित पशु आहार :

पशु आहार की वह मात्रा जिससे पशु की सभी आवश्यकताऐं जीवन निर्वाह, उत्पादन वृद्धि, प्रजनन कार्य आदि पूरा होता हो तथा पशु को स्वस्थ रखने के लिए सभी आवश्यक पोषक तत्व, प्रोटीन, कार्बोहाइडेट्स, वसा, खनिज लवण, विटामिन्स आवश्यक मात्रा व अनुपात में प्राप्त हों।

संतुलित पशु आहार की विशेषताऐं :-

1. संतुलित पशु आहार में सभी पोषक तत्व उचित मात्रा में होने चाहिये।
2. आहार पाचक, स्वादिष्ट तथा पौष्टिक होना चाहिये।
3. ऐसा आहार जिसको खाने पर पशु की संतुष्टि हो।
4. आहार स्वास्थ्यवर्धक हो।
5. खाद्य पदाथ संतुलित मात्रा में हो।
6. आहार पशु के दूध में किसी प्रकार की दुर्गन्ध पैदा करने वाला न हो।
7. इसमें संतुलित मात्रा में खनिज लवण, विटामिन्स तथा प्रोटीन आवश्यक मात्रा में हों।
8. आहार शुद्ध एवं रसीला भी हो।
9. इसमें कोई विषैला पदार्थ न मिला हो।
10. आहार में प्रयोग होने वाली सामाग्री की क्षेत्रों में आसानी से उपलब्धता हो।

पशुओं को संतुलित आहार देने के लिए निम्नलिखित मूलभूत सिद्धान्त तथा नियम निर्धारित किये गये हैं :-

1. पशुओं को चारा–दाना प्रतिदिन एवं निर्धारित समय पर ही दिया जाना चाहिए। पशुओं को 10–12 घण्टे के अन्तर से सुबह व सांय दो बार अवश्य आहार खिलाना चाहिए।
2. पशुओं के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार किया जाना चाहिए।
3. पशुओं के आहार में पूरे वर्ष हरे चारे की मात्रा अवश्य सम्मिलित होनी चाहिए।
4. चारे को काटकर खिलाना चाहिए। इसी प्रकार दाने को पीसकर तथा भिगोकर खिलाना चाहिए जिससे उसकी पाचकता बढ़े तथा खाने में भी पशु को स्वादिष्ट लगे।
5. शारीरिक वृद्धि करने वाले पशुओं, सूखी व गर्भवती गायों, साँड़ों तथा खेतों में कार्य करने वाले बैलों के लिए उनकी "खाद्य मानक" में दी गयी आवश्यकताओ के अनुसार पशु आहार की गणना करके ही दी जानी चाहिए। इसके लिए मोटे तौर पर पशु को 1 से 2 किलोग्राम दाना मिश्रण प्रतिदिन अलग से अवश्य देना चाहिए।
6. प्रत्येक वर्ग व श्रेणी के पशुओ को अलग–अलग आहार (राशन) बनाकर देना चाहिए।
7. चारे की सामग्री एकाएक नहीं बदलना चाहिए। बदलने के लिये धीरे–धीरे कम मात्रा में चारा पशु को खिलाना चाहिए, ताकि उसके आहार तथा पाचन तंत्र पर कोई बुरा असर न पडे।
8. प्रत्येक दूध देने वाले तथा गर्भित पशु को प्रतिदिन 2 से 5 किलोग्राम हरा चारा अवश्य देना चाहिए। हरे चारे में प्रोटीन, विटामिन तथा खनिज लवण जैसे पौष्टिक तत्व अधिक होते है जिससे पशुओं की उत्पादन शक्ति में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त दुग्ध उत्पादन के लिए कुल दूध की मात्रा का लगभग एक तिहाई भाग पौष्टिक "दाना मिश्रण" पशुओं को खिलाना चाहिए।
9. दाना मिश्रण सदैव पहले खिलाकर बाद में सूखा या हरा चारा पशुओं को देना चाहिए। इससे दाने का अच्छा पाचन होता है।
10. पशु को "कुल शुष्क पदार्थ" (टोटल ड्राई मैटर) की आवश्यकता का दो तिहाई भाग सूखे व हरे चारे से तथा शेष एक तिहाई भाग पौष्टिक "दाना मिश्रण" से मिलना चाहिए।
11. दुधारू एवं वृद्धि करने वाले पशु यदि चरागाहों में चरने नहीं जाते, तो उन्हें दिए जाने वाले दो तिहाई सूखे चारे से तथा एक तिहाई भाग हरे चारे या साइलेज से होना चाहिए। यदि हरा चारा फलीदार हो तो यह मात्रा घटाकर एक चौथाई की जा सकती है।
12. पशुओं की आवश्यकतानुसार पर्याप्त मात्रा में दिन में कई बार शुद्ध तथा स्वच्छ पानी पिलाना चाहिए।
13. अधिकतम शुष्क पदार्थ (ड्राई मेटर) को ग्रहण करने के लिए पशु को पर्याप्त हरा चारा दिया जाना चाहिए।
14. किसी बीमार पशु का जूठा चारा दूसरे स्वस्थ पशु को नहीं देना चाहिए (इससे बीमारी लगने की संभावना रहती है)।
15. पशु के शरीर के वजन के आधार पर शुष्क पदार्थों की गणना करके चारा तथा दाना मिश्रण दिया जाना चाहिए।
16. दिये जाने वाले चारे तथा दाने में यदि पर्याप्त मात्रा में खनिज लवण तथा विटामिन्स न हो तो इन तत्वों को अन्य सामग्री से पूरा करना चाहिये।
17. चारे तथा दाने का "आदर्श राशन" के लिए चुनाव करने में यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उस चारे में कोई गंदगी न हो और कीड़े भी न लगे हो।
18. ऐसे चारे तथा दाने जिनसे दूध में गन्ध आने की संभावना हो, उन्हें दूध निकालने के बाद ही पशु को खिलाया जाना चाहिये।

संतुलित पशु आहार खिलाने से लाभ :

पशुओ को संतुलित आहार देने के निम्नलिखित लाभ होते हैं :–

1. पशु आहार के सभी पोषक तत्व संतुलित होने से पशु को जीवनयापन, वृद्धि, दुग्ध उत्पादन आदि कार्यों के लिए सभी आवश्यक ऊर्जा तथा पोषक तत्व मिल जाते हैं।
2. संतुलित आहार खिलाने से दुग्ध उत्पादन मात्रा में वृद्धि तथा इसकी उत्पादन लागत में कमी होती है।
3. चारे की उपलब्धता न होने पर पशु का सामान्य पोषण प्रतिकूल रूप से प्रभावित नहीं होता है।
4. संतुलित पशु आहार खिलाने से पशुओं में रोगों से लड़ने की शक्ति बढ़ती है।
5. ऐसा आहार देने से पशु को संतुष्टि होती है। अतः पशु मानसिक तथा शारीरिक दोनों प्रकार से स्वस्थ रहता है।
6. संतुलित आहार खिलाने पर पशु का प्रजनन समय से होंता है तथा उसकी प्रजनन क्षमता बढती है।
7. मादा पशु को संतुलित आहार देने से उसके पैदा होने वाले बच्चे का भार अधिक होता है।